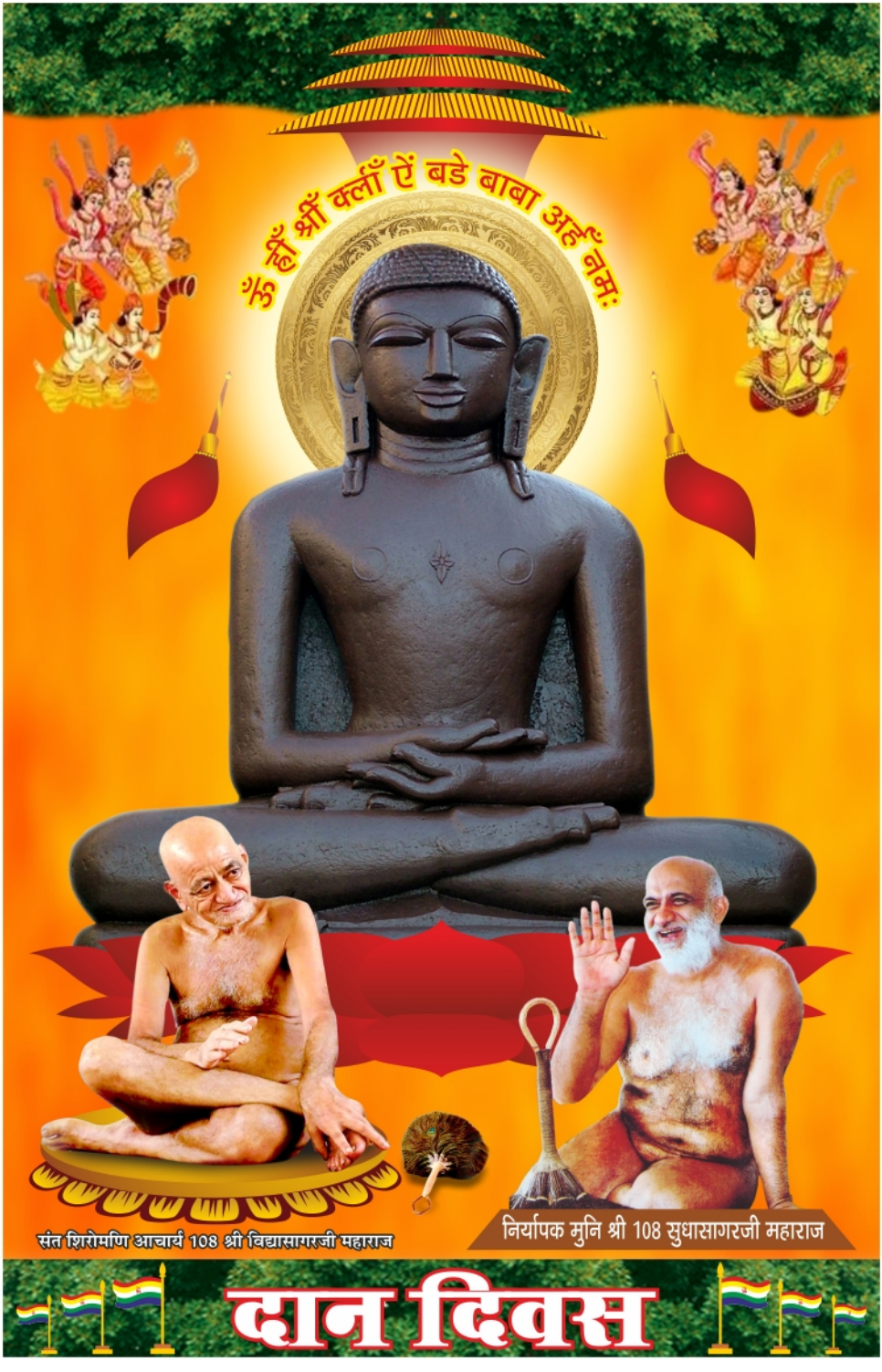

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं बडे बाबा अर्हं नमः
संत शिरोमणि आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज
निर्यापक मुनि श्री 108 सुधासागरजी महाराज
दान दिवस

प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक, वास्तुविद, पुरातत्त्व - सरंक्षी,
नव तीर्थ - प्रणेता, साक्षात तीर्थ-स्वरूप, ज्ञान रथ के
सारथी, विद्या गौ के सुदोग्धा, श्रमण संस्कृति - सूर्य,
मिथ्यात्व भञ्जक, शान्ति-धारातिशय निदर्शक, श्रावक
संस्कार शिविर जनक, जिज्ञासा - समाधान - प्रतिपादक,
विद्धत्कल्पतरु, विद्यार्थि-पितृकल्प, आगम के यथार्थ
उपदेष्टा, वर्तमान काल के समनतभद्र, समयसार -
शिक्षक, भक्त-वत्सल, महोपकारी, महान्तपोमार्तण्ड,
रिद्धि - सिद्धि भक्तामर मंत्रो के निदर्शक,
ज्ञानध्यान तपोरक्त, प्रखर चिन्तक, तर्क - वाचस्पति,
विपथ - गामि-चक्षुरुन्मीलक, वाग्भी, मनोज्ञ, ऋषिराज,

निर्यापक श्रमण, जगत्पूज्य मुनि पुंगव
108 श्री सुधासागर जी महाराज

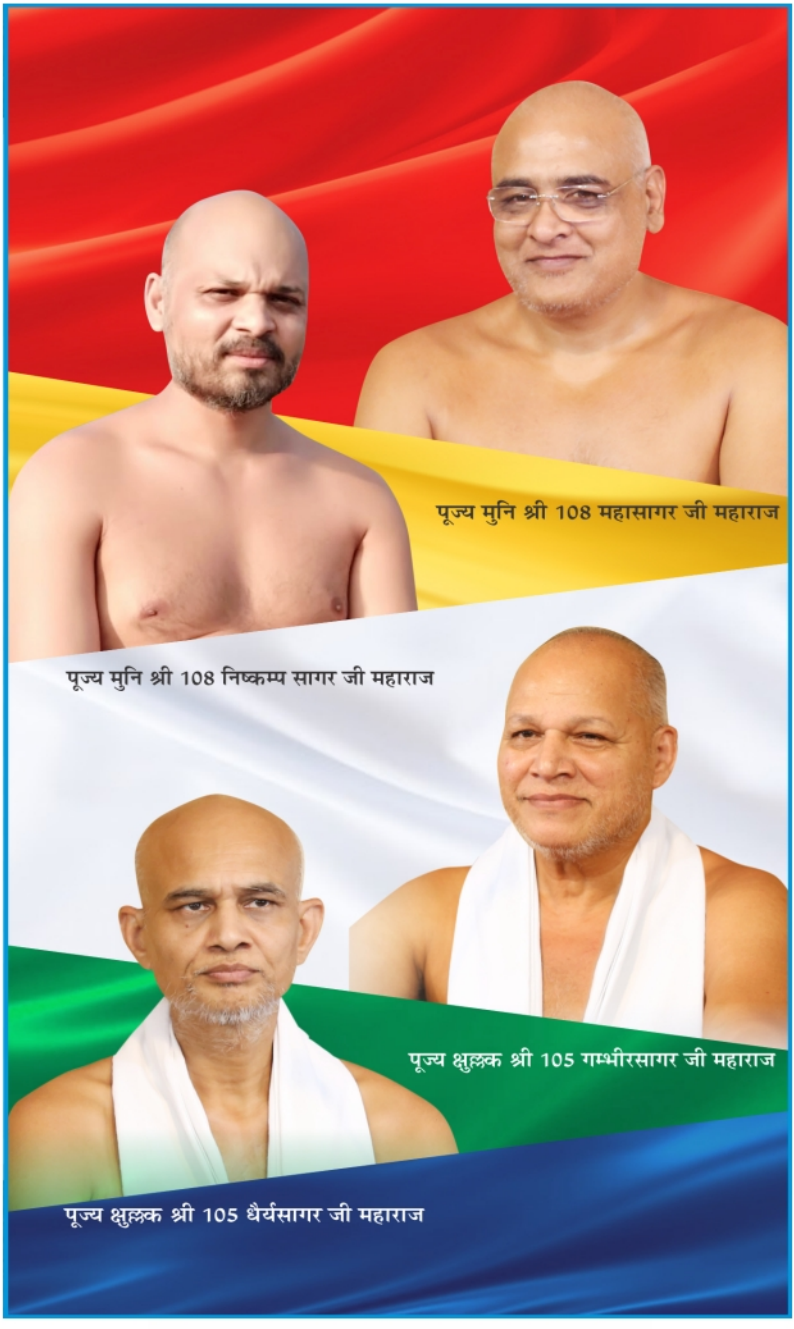
पूज्य मुनि श्री 108 महासागर जी महाराज
पूज्य मुनि श्री 108 निष्कम्प सागर जी महाराज
पूज्य क्षुल्लक श्री 105 गम्भीरसागर जी महाराज
पूज्य क्षुल्लक श्री 105 धैर्यसागर जी महाराज

दान दिवस श्री आदिनाथ बड़ेबाबा पूजा

(अक्षयतृतीयापर्व सहित)

जिनगीतिका छन्द

श्रेयांस नृप आहार दाता, पात्र मुनि पुरुदेव हैं,
वैशाख सित की तीज बनती, अक्षयी स्वयमेव है।
विधि द्रव्य दाता पात्र से, होती सुदान विशेषता,
इस हेतु पूजन आदिप्रभु की, प्राप्त हो सर्वेशता ॥
वैशाख सित तृतीया जगत में, बन गयी अक्षयकरी,
श्रेयो नृपति ने इक्षु रस दे, प्राप्त की अक्षय घरी।
अक्षय तृतीया पारणा दिन, आदि जिन पूजन करूँ,
श्रेयांस नृप द्वारा प्रवर्तित, दान तीर्थ यजन करूँ ॥

ओं ह्रीं तीर्थंकरआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

(तर्ज- देख तेरे संसार की हालत.....।)

इक्षु रस से किया पारणा, अक्षय तीज महान।
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥
जन्म जरा मृति का क्षय करने, चले आदि शिव रमणी वरने,
युगादि तीर्थंकर ऋषिवर ने, मुक्ति द्वार खोला भव तरने।
ऐसे जिन को नीर चढ़ाऊँ, करूँ कर्म की हान,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चारों गतियों से उठने को, पंचम गति के सुख चखने को,
भव भव का संताप मिटाने, चले आदि जिन समता पाने।
ऐसे जिन को चंदन अर्पूं, पाने समता धाम,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर इन्द्रियसुख तजने, शाश्वत आत्मिक शिवसुख भजने,
इन्द्रिय सुख को खंडित करने, चले आदि मन दंडित करने।

ऐसे जिन को अक्षत अर्पूं, पाने अक्षय धाम,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य का विरुद्ध नेता, मोह जीत जिन बने विजेता,
झुका लिया चरणों में अपने, भूला काम स्वयं के सपने।
ऐसे जिन को पुष्प चढ़ाऊँ, हरने मन्मथ बाण,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा के दिन से तप साधा, षण्मासी अनशन बिन बाधा,
तेरह मास दिवस नव बीते, निराहार दिन पुरु ने जीते।
ऐसे क्षुधा विजेता जिन को, चरु अर्पें गुणवान,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनमत तीन ज्ञान के धारी, दीक्षा से मन पर्यय जारी,
केवल ज्ञान बिना नहिं बोलें, वर्ष सहस्र रहे अनबोले।
ऐसे जिन को दीप चढ़ाऊँ, पाने सम्यग्ज्ञान,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष का नीर सुखाते, देह विषय का नेह घटाते,
ध्यान अनल में कर्म जलाते, तब आतम में शुचिता पाते।
ऐसे जिन को धूप चढ़ाऊँ ,पाने गुण गण धाम,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्रायअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख मिश्रित विषयों के त्यागी, शाश्वत सुख के पुरु अनुरागी,
पुण्य फलों को त्याग दिया है, शिव पाने वैराग्य लिया है।
ऐसे जिन को शिवफल पाने, चढ़ा रहे बादाम,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मूल्यवान दिखते जो भूपर, सारे अर्घ रहे वे नश्वर,
महा मोक्ष पद अनर्घ जाना, तभी धरा प्रभु ने मुनि बाना।
ऐसे जिन को अर्घ चढ़ाऊँ , पाने पद निर्वाण,
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥
इक्षु रस से किया पारणा, अक्षय तीज महान।
जय जय आदिनाथ भगवान, जय जय दाता नृप श्रेयान ॥

ओं ह्रीं अक्षयतृतीयापर्वणि श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ

सखी छन्द

नृप नाभिराय आँगन में, मरुदेवी हर्षित मन में।
आषाढ़ असित दोयज थी, गर्भागम तिथि पुरुवर की ॥

ओं ह्रीं आषाढ़कृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ।

कलि चैत्र मास नवमी थी, पुरुदेव जन्म की तिथि थी।
पितु नाभिराय हर्षाये, सौधर्म अयोध्या आये ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ।

प्रभु देख मृत्यु नीलांजन, विरकत अलि चैत नवम दिन।
लौकान्तिक सुर थुति करते, आदीश्वर जब तप धरते ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं ।

पुरुदेव प्रथम आहारा, तृतीया अक्षय गुण धारा।
श्रेयांस भूप बड़भागी, आहार दिये अनुरागी ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लतृतीयायां पारणानिमित्तकपंचाश्चर्ययुक्त-अक्षय तृतीयोत्पादक तीर्थंकरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वर्ष सहस तप कीना, कैवल्य ज्ञान गुण लीना।
फाल्गुन कलि एकादशि को, उपदेशा पुरु ने भवि को ॥

ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां केवलज्ञानमंगलमण्डितायश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं

पुरु माघ वदी चउदश को, पाते अव्यय शिव पद को।
अष्टापद तीर्थ कहाया, जहाँ अन्तिम ध्यान लगाया ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं

जयमाला (यशोगान)

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें दिखायें.....।
तृतीया अक्षय अमर हो गई, आदिनाथ आहार से।
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से ॥
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥ध्रुव॥
हस्तिनागपुर में श्रेयो नृप, शयन कर रहे थे निशि में,
सित वैशाख दोज की अंतिम, रात स्वप्न देखे नृप ने।
जाना महापुरुष आयेंगे, स्वप्न फलों के ज्ञान से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥1॥
मेरु, कल्पतरु, सिंह, वृषभ,रवि, शशि, समुद्र ये सप्त सुपन,
तीर्थंकर की विशेषता का, गान करे ज्योतिष दर्पण।
मन ही मन प्रमुदित होते हैं, श्रेयो नृप फल सार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥2॥
हस्तिनागपुर में जब प्रातः, आते देखे भिक्षा को,
तब श्रीमति भव की स्मृति झलकी, भिक्षा मुद्रा सुनो अहो!
तत्क्षण पड़गाये जाते प्रभु, श्रेयान् की विधि द्वार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥3॥
भ्रात सोमप्रभ भाभी लक्ष्मी, श्रेयस के सह पड़गाती,
त्रय प्रदक्षिणा कर लक्ष्मीमति, महापात्र लख हर्षाती।
देख-देख अनुकरण करें द्वय, सीखें श्रेय कुमार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥4॥
चौके में ले जाकर प्रभु को, उच्चासन पर बैठाते,
प्रासुक जल से पद कमलों को, धुला भ्रात द्वय हर्षाते।
फिर सब जन गंधोदक वंदें, लगा रहे निज भाल से,

श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥5॥
अष्ट द्रव्य से पूजन करके, नमोऽस्तु करते प्रभुवर को,
मन वच तन आहार शुद्धि को, बोल दिखाते शुचि रस को।
प्रभो! पारणा आप कीजिए, गन्ना रस आहार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥6॥
कायोत्सर्ग करें तज मुद्रा, करते पुरु सिद्धों का ध्यान,
खड़े हुए प्रभु ने कर जोड़े, तब रस देते नृप श्रेयान।
अल्पाहार ग्रहण कर त्यागा, गमन किया गृहद्वार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥7॥
दान तीर्थ की परम्परा के, कर्त्ता रहे प्रथम श्रेयान,
रत्न पुष्प सुरभित जल वर्षा, वायु मंद बहती जयगान।
पंचाश्चर्य प्रकटते नभ से, प्रभुवर के आहार से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥8॥
दाता पात्र दान द्रव्यों से, दान सफल जानो भविजन,
अक्षय तृतिया दिन मुनियों को, दो आहार करो भोजन।
दश जीवों ने शिव पद पाया, मुनि आहार प्रदान से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय अक्षय तीज महान ॥9॥
भ्रात सोम भाभी लक्ष्मी सह, श्रेयस ने आहार दिये,
तभी आज उनकी प्रतिमा को, जग देता सम्मान हिये।
तृतीया पर्व मनाओ कहती, 'मृदुमति' सुपात्र दान से,
श्रेयो नृप गृह हुई पारणा, इक्षु रस आहार से।
जय आदिनाथ भगवान, जय दाता नृप श्रेयान् ॥10॥

ओं ह्रीं अक्षयतृतीयापर्वनिमित्तकतीर्थंकरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं नि.।

धर्म तीर्थ कर्त्ता प्रथम, आदीश्वर भगवान।
दान तीर्थ कर्त्ता प्रथम, 'मृदुमति' नृप श्रेयान ॥

आर्या छन्द

अक्षयपर्वतृतीया, दानदिवस-निरूपितकृतो येन।
तस्मै मुनिनिर्यापक-, श्रमणसुधासागराय नमः ॥

। इति शुभं भूयात्।

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥

अतिशयकारी श्री 1008 आदिनाथ भगवान गुफा मन्दिर, अजमेर (राज.)

विघ्नहर्त्ताश्रीआदिनाथभक्तामरस्तोत्रविधान

उपजातिछन्दः

तर्ज- संपूजकानां प्रतिपालकानां .....।

भक्तामरस्थं वृषभं जिनेन्द्रं, कल्याणयुक्तं हृदये दधामि ।
हेभव्यबन्धो!तव भक्तियोगात्,संसारदुःखं खलु नाशयामि ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नभक्तामरस्तोत्रस्थितविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठःस्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्!

यो जन्महीनो जरसा विहीनो, मृत्युप्रहीणो भयदोषहीनः।
तं देवदेवं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं सलिलै-र्यजामि ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जलं।

यःस्वास्थ्ययुक्तःशिवसौख्ययुक्तः, कषायमुक्तःस्थिरभावयुक्तः।
तं तीर्थनाथं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रयजे सुगन्धैः॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय चंदनं।

यो शोकमुक्तो रतिरागरिक्तो, निद्राविमुक्तो मददोषमुक्तः।
तं वीतरागं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रयजेऽक्षतौघैः ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अक्षतान्।

मोहारिजेता मदनारिजेता, तीर्थप्रणेता वसुकर्मभेत्ता ।
यस्तं मुनीन्द्रं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं कुसुमैर्यजामि ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पुष्पं।

येनोपवासैर्विजितं क्षुधार्त्तिं, शुद्धात्मपानैर्विजितं तृषार्त्तिं।
मुमुक्षुमिक्ष्वाकु-कुलादिचन्द्रं, भक्तामरस्थं चरुभिर्यजामि ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नैवेद्यं।

आनन्त्यदृग्ज्ञानसुखप्रवीर्यं, चतुष्करूपं गुणमस्ति यस्य।
तं शक्रवन्द्यं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रयजे सुदीपैः ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय दीपं।

उद्वेगसंविस्मयदोषमुक्तं, स्वेदैर्विमुक्तं गदखेदमुक्तं।
चिन्ताविमुक्तं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रयजे सुधूपैः ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्षूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय धूपं।

निर्दोषदेवं हितदर्शकं च, संगै-र्विमुक्तं जिनपं प्रबुद्धं।
तं वीतदोषं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रयजे फ लौघैः ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्ष्रें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय फ लं।

विद्याब्धिवन्द्यं मुनिपुंगवश्री, सुधाब्धिवन्द्यं मुनिसंघवन्द्यं।
देवेन्द्रवंद्यं वृषभं जिनेन्द्रं, भक्तामरस्थं प्रमहामि सार्घैः ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्ष्रें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

ज्ञानोदय छन्द

ओं बीजी नक्षत्र रोहिणी, वृषभ राशि पति शुक्र रहा,
शुक्ल वर्ण सब सिद्धि प्रदाता, प्रणव बीज सर्वत्र रहा।
तेज ज्ञान शुचि भक्ति प्रदायक, पंच परम गुरु मन्त्र रहा,
परमेष्ठी के आद्य वर्ण मिल, ओं बीजाक्षर शोभ रहा ॥

दोहा

ओं प्रणव बीजाक्षर, पन परमेष्ठी वाच्य।
णमोकार संक्षिप्त में, नमूँ परम गुरु प्राच्य ॥1॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पंचकल्याणक अर्घ - छन्द सखी

आषाढ़ द्वितीया असिता, गर्भागम पुरु का लसता।
मरुदेवी माँ हर्षाती, साकेतपुरी सुख पाती ॥1॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णद्वितीयायां गर्भकल्याणमण्डितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

चैत्री असिता नवमी थी, पुरुदेव जन्म की तिथि थी।
नृप नाभिराय आंगन में, जन्मोत्सव मने गगन में ॥2॥

ओं ह्रीं क्लीं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्मकल्याणमण्डितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

प्रभु जन्मदिवस तप धारा, खोला मुनि पद का द्वारा।
षण्मासी अनशन धारा, पुरुदेव स्वयंभू न्यारा ॥3॥

ओं ह्रीं क्ष्रूं चैत्रकृष्णनवम्यां तपःकल्याणमण्डितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

फाल्गुन एकादशि कारी, प्रभु पूर्ण ज्योति उजियारी।
हुई समवसरण की रचना, प्रभु के सुनते भवि वचना ॥4॥

ओं ह्रीं क्षें फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानकल्याणमण्डितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

माघी कृष्णा चौदस को, आदीश्वर अष्टापद को।
जा अन्तिम ध्यान लगाया, प्रभु ने शिवपुर को पाया ॥ 5॥

ओं ह्रीं घ्रौं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणमण्डितश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

प्रथम वलय

ज्ञानोदय छन्द

ह्रीं बीजी नक्षत्र पुनर्वसु, कर्क राशि पति चन्द्र रहा,
बहुरूपी माया बीजाक्षर, सब मन्त्रों में व्याप्त रहा।
भद्र स्वभावी मित्र बनाता, अरि जन को भी मित्र करे,
बुराईयों से दूर कराता, ह्रीं भजना सब शत्रु हरे ॥

दोहा

ह्रीं बीजाक्षर शक्ति का, श्रुत का भी आधार।
नमूँ इसे मैं भक्ति से, रहूँ सदा अविकार ॥1॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

वसन्ततिलका छन्द

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि -प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम् ॥1॥

पद्यानुवाद-आर्यिका मृदुमति माताजी कृत

ज्ञानोदय छन्द

हे जिनदेव! आपके पद युग, फैले अघ तम को हरते।
भक्त सुरों के नत मुकुटों की, रत्न कान्ति ज्योतित करते ॥
युगादि में भव जल पतितों को, ऊपर उठने हाथ रहे।
ऐसे जिनेन्द्र तीर्थंकर के, पद में यह नत माथ रहे ॥1॥

ओं ह्रीं विश्वविघ्नहराय ह्रीं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थितश्रीआदिनाथाय अर्घं।

यः संस्तुतः सकल - वाङ् मय - तत्त्व-बोधा-

दुद्भूत-बुद्धि - पटुभिः सुर - लोक - नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्- त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥2॥

सकल शास्त्र के तत्त्व बोध से, चतुर बुद्धि इन्द्रों द्वारा।
त्रिभुवन मनहर विशाल थुति से, जो संस्तुत जिन गुण द्वारा ॥
उन्हीं प्रथम जिन की स्तुति करने, मैं भी अब संकल्प करूँ।
जिन संस्तुति का लक्ष्य यही है, चारों गति के दुःख हरूँ ॥2॥

ओं ह्रीं नानामरसंस्तुताय ह्रीं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थितश्रीआदिनाथाय अर्घं।

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल -संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥3॥

जल में स्थित शशि बिम्ब पकड़ने, इच्छुक बालक, नहिं मतिमान।
त्यों प्रभु की स्तुति करने उद्यत, लाज छोड़कर मैं बिन ज्ञान ॥
विबुध वन्द्य पद आसन जिनका, ऐसे तीर्थंकर भगवान।
जिनकी स्तुति से कट जाते हैं, भव भव के सन्ताप महान ॥3॥

ओं ह्रीं सुज्ञानप्रकाशनाय ह्रीं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थितश्रीआदिनाथाय अर्घं।

वक्तुं गुणान्गुण -समुद्र! शशाङ्क-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर - गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्त -काल - पवनोद्धत - नक्र- चक्रं ,
को वा तरीतुमल - म्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥4॥

गुण के समुद्र हे तीर्थंकर!, शशि सम उज्ज्वल गुण तेरे।
जिन्हें बुद्धि से सुरगुरु सम भी, कह न सके गुण बहु तेरे ॥
प्रलय काल के वायु प्रताड़ित, मच्छ समूह उभर आये।
उस समुद्र को भुजबल द्वारा, कौन तैर कर तट पाये ॥4॥

ओं ह्रीं नानादुःखसमुद्रतारणाय ह्रीं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथाय अर्घं।

महार्घ- अनुष्टुप् छंदः

प्रथमे वलये पूज्यं, आदिनाथजिनेश्वरं।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, ओं ह्रीं बीजेन संयजे ॥

ओं ह्रीं रत्नत्रयप्राप्तये ह्रीं बीजाक्षरसहितभक्तामरस्थप्रथमवलयस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं ।

ज्ञानोदय छन्द

क्लीं बीजी नक्षत्र मृगशिरा, मिथुन राशि बुध स्वामि रहा,
शुक्ल वर्ण शुचि गंध स्वाद पय, कोमल स्पर्शी धनिक चहा।
बीज अनंग विकार दोष हर, ई लक्ष्मी बल कार्यप्रदा,
इन्द्र बीज ल अन्न बलद म, सार्वभौम क्लीं धान्यप्रदा ॥

दोहा

क्लीं बीजाक्षर वज्र सम, बनता कवच अभेद।
अशुभ शक्ति नहिं आ सके, वज्र कवच को भेद ॥2॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥5॥

शक्ति विचारे बिना मृगी ज्यों, निज शिशु की रक्षा करती।
क्रूर सिंह के सम्मुख जाती, बाल प्रीति मन में धरती ॥
त्यों जिनेन्द्र प्रभु! आप भक्तिवश, तुम गुण गाने उद्यत हूँ।
बुद्धि शक्ति से हीन भले पर, थुति करने संकल्पित हूँ ॥5॥

ओं ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

अल्प- श्रुतं - श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,

तच्चाम्र -चारु -कलिका-निकरैक -हेतुः ॥6॥

अल्पश्रुती मैं श्रुतवन्तों के, मध्य हँसी का पात्र रहा।
किन्तु भक्ति वश संस्तव करने, प्रेरित है यह चित्त महां ॥
आम्र मौर लख कोयल गाती, मधु ऋतु में फल आम मिले।
त्यों जिनवर के संस्तव तरु पर, शान्त सुखद शिवधाम फले ॥6॥

ओं ह्रीं याचितार्थप्रतिपादनशक्तिसहिताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षय-मुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम् ॥7॥

सकल लोक में व्याप्त रात्रि के, अलि सम काले सब तम को।
जिस विध रवि की प्रचण्ड किरणें, छिन्न भिन्न करती उसको ॥
त्यों जिन संस्तव से जीवों के, भव भव के अघ टल जाते।
क्षण भर में जिनवर प्रभाव से, भक्तों के मन खिल जाते ॥7॥

ओं ह्रीं सकलपापफलकुष्टनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु- धियापि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु ,
मुक्ता-फल - द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः ॥8॥

संस्तव फल जिन! मान आपका, अल्प बुद्धि संस्तवन करे।
प्रभु प्रभाव से यह जिन संस्तव, सन्तों का भी चित्त हरे ॥
कमल पत्र पर जल की बूँदें, ज्यों मोती सम भाती हैं।
त्यों जिनवर के गुण प्रभाव से, कविता प्रभाव लाती है ॥8॥

ओं ह्रीं संसारदुःखनिवारणाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥9॥

दोष रहित संस्तवन आपका, दूर रहे महिमा वाला।
किन्तु आपकी सत्य कथा भी, हर लेती अघ की माला ॥
दूर गगन में सूर्य भले हो, किन्तु प्रभा भी विकसाती।
भू पर सर में कमल दलों को, खिला खुला कर विहँसाती ॥9॥

ओं ह्रीं सकलमनोवांछितफलदात्रे क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण! भूत-नाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥10॥

तीन भुवन के आभूषण प्रभु, सर्व जीव के नाथ तुम्हीं।
सत्य गुणों से तुम्हें भजे जो, वे बनते गुणनाथ सही ॥
आप समान भक्त हो जाते, इसमें क्या आश्चर्य महां।
जो आश्रित को करे न निज सम, उस नृप से क्या अर्थ रहा ॥10॥

ओं ह्रीं अर्हज्जिनस्मरणसम्भूताय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत्? ॥11॥

अपलक दर्शनीय प्रभु तेरे, जो जन दर्शन कर जाते।
उनके नयना अन्य रूप को, लखकर तोष नहीं पाते ॥
शशि किरणों सम क्षीर उदधि का, मिष्ट नीर पीने वाला।

क्या खारा जल पीना चाहे, समुद्र का, जीने वाला ॥11॥

ओं ह्रीं सकलतुष्टिपुष्टिकराय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि - भुवनैक - ललाम-भूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥12॥

जिन विराग सुन्दर अणुओं से, रचे आप अणु वे उतने।
दूजा रूप नहीं इस भूपर, शुचि परमाणु रहे इतने ॥
त्रिभुवन के अनुपम आभूषण, सुन्दरता के एक धनी।
वीतराग सौन्दर्य देखकर, लज्जित जग के रूपमणी ॥12॥

ओं ह्रीं वांछितरूपफलशक्तये क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

महार्घ

द्वितीये वलये पूज्यं , आदिनाथजिनेश्वरं ।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, ओं क्लीं बीजेन संयजे ॥

ओं ह्रीं जिनगुणसम्पत्तिप्राप्तये क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

तृतीय वलय

ज्ञानोदय छन्द

क्षूं बीजी उडु उत्तर भाद्रा, मीन राशि पति गुरु पीला,
सर्व काल प्रिय सबका रक्षक, सुरभित गन्ध मिष्ट तरला।
करे बचाव अकाल मरण का, मृत्युंजय यह कहलाता,
क्षूं बीजाक्षर आदिनाथ का, भजो शान्ति सुख को लाता ॥

दोहा

क्षूं बीजाक्षर इष्ट का, मिलन कराने मित्र।
आदिनाथ से मिल सके, नृप श्रेयांस पवित्र ॥3॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम् ॥13॥

कहाँ आपका प्रभु! मुखमण्डल, सुर नर अहिपति मनहारी।
त्रिभुवन की उपमायें जीतीं, जिनवर अनुपम मुख धारी ॥
शशि की उपमा उचित नहीं है, क्योंकि चन्द्रमा समल रहा।
तथा दिवस में पलाश दल सम, क्षीण कान्ति में बदल रहा ॥13॥

ओं ह्रीं लक्ष्मीसुखविधायकाय क्ष्वूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

सम्पूर्ण- मण्डल-शशाङ्क - कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास् - त्रि-भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास् - त्रि-जगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ॥14॥

पूर्ण चन्द्र की सर्व कला सम, धवल आपके जो गुण हैं।
तीन लोक को लाँघ रहे वे, स्वतन्त्र करते विचरण हैं ॥
ठीक बात है त्रिभुवनपति का, जिसने भी आश्रय पाया।
उसे विचरने प्रभु सीमा में, कौन रोकने को आया ॥14॥

ओं ह्रीं भूतप्रेतादिभयनिवारणाय क्ष्वूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

चित्रं - किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम् ।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ॥15॥

सुरियाँ प्रभु का चित्त जरा भी, कभी न विचलित कर पायीं।
तो इसमें आश्चर्य रहा क्या, सुरगिरि सी दृढ़ता पायी ॥

प्रलय काल की तीव्र वायु से, भले क्षुद्र गिरि हिल जाते।
किन्तु कभी क्या सुमेरु चोटी, हिला सकी, अविचल पाते ॥15॥

ओं ह्रीं मेरुवन्मनोबलकरणाय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय - मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस् -त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥16॥

धूम्र वर्तिका तैल बिना प्रभु, त्रिभुवन को प्रकटित करते।
अचल हिलाती वायु गम्य नहिं, ऐसा ज्ञान दीप धरते ॥
हे जिनवर! तुम जगत प्रकाशी, अपूर्व दीपक कहलाये।
हम अज्ञानी तुम्हें पूजने, घृत का दीपक ले आये ॥16॥

ओं ह्रीं त्रैलोक्यवशंकराय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्- जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा- प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥17॥

अस्त न होते कभी आप जिन!, नहीं राहु से ग्रसे कभी।
नहीं मेघ के उदर समाये, ज्ञान तेज नहिं रुके कभी ॥
आप लोक में रवि से बढ़कर, अतिशय महिमा धरते हो।
त्रिभुवन के सब पदार्थ युगपत्, सहज प्रकाशित करते हो ॥17॥

ओं ह्रीं पापाधंकारनिवारणाय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारम्,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज - मनल्पकान्ति,

विद्योतयज्-जगदपूर्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥18॥

मोह तिमिर को दलने वाला, नित्य उदित रहने वाला।
राहु वदन से ग्रसा न जाता, नहिं घन से घिरने वाला ॥
अमित कान्ति से तीन जगत को, सदा प्रकाशित करता है।
ऐसा प्रभु का मुखाब्ज अनुपम, शशि मण्डल सा लगता है॥18॥

ओं ह्रीं चन्द्रवत्सर्वलोकोद्योतनकराय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमःसु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनि जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल-धरै-र्जल-भार-नम्रैः ॥19॥

प्रभो! आपके मुख शशि द्वारा, अंधकार नश जाने से।
दिन में रवि से निशि में शशि से, नहीं अर्थ द्युति पाने से ॥
मनुज लोक में पकी धान युत, खेत अगर लहलहा रहे।
तब जलभृत उन नम्र घनों से, कुछ न प्रयोजन उन्हें रहे ॥19॥

ओं ह्रीं सकलदोषनिवारणाय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।
तेजो महामणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच -शकले किरणाकुलेऽपि ॥20॥

सर्व तरह अवकाश प्राप्त वह, ज्ञान आप में शोभ रहा।
हरिहरादि देवों में वैसा, पूर्ण ज्ञान नहिं द्योत रहा ॥
जैसा तेज महामणियों में, शुचि महत्व को पाता है।
किरण व्याप्त भी काच खण्ड में, वैसा तेज न भाता है ॥20॥

ओं ह्रीं केवलज्ञानप्रकाशितलोकालोकस्वरूपाय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

मन्ये वरं हरि - हरा - दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥21॥

हरिहरादि का दर्शन करना, पहले मुझको श्रेष्ठ रहा।
क्योंकि आपके दर्शन करके, फिर न कहीं सन्तोष लहा ॥
जिन दर्शन से लाभ रहा यह, अब नहिं सराग मन भाये।
भवान्तरों में भी तेरे बिन, कोई नहीं लुभा पाये ॥21॥

ओं ह्रीं सर्वदोषहरशुभदर्शनाय क्ष्रूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥22॥

शतकों जननी शतकों सुत को, जनती रहतीं सदा यहीं।
तुम तीर्थंकर जैसे सुत को, जनतीं जननी अन्य नहीं ॥
नक्षत्रों को सर्व दिशायें, सदा सदा धारण करती।
तेज किरणमय सूर्य बिम्ब को, केवल पूर्व दिशा जनती ॥22॥

ओं ह्रीं अद्भुतगुणाय क्ष्रूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य - गुपलभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यःशिवःशिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः ॥23॥

हे मुनीन्द्र! तुमको सब मुनिजन, सूर्य वर्ण वाले माने।
अन्धकार से दूर आपको, निर्मल परम पुरुष माने।
सम्यक् विधि से तुम्हें प्राप्त कर, सन्त मृत्यु पर जय पाते।

बिना आपके शिवपद का पथ, हितकर अन्य नहीं गाते ॥23॥

ओं ह्रीं मनोवांछितफलदायकाय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग - मनेक - मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥24॥

हे जिन! सन्त आपको अव्यय, विभु अचिन्त्य ईश्वर कहते।
आद्य असंख्य अनेक एक भी, अनंगकेतु तथा कहते ॥
तुम योगीश्वर विदित योग भी, प्रभु अनन्त कहलाते हो।
ज्ञान स्वरूप अमल परमेश्वर, ब्रह्मा गाये जाते हो ॥24॥

ओं ह्रीं सहस्त्रनामाधीश्वराय क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थितश्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

महार्घ

तृतीये वलये पूज्यं, आदिनाथजिनेश्वरं।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, ओं क्षूं बीजेन संयजे ॥

ओं ह्रीं अनंतचततुष्टय प्राप्तये क्षूं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थ तृतीयवलयस्थित श्रीआदिनाथाय महार्घं ।

चतुर्थ वलय

ज्ञानोदय छन्द

क्षें बीजी उडु उत्तर भाद्रा, मीन राशि पति गुरु पीला,
चन्द्र बीज पुरुषार्थ सफलदा, ए शुभ वश्याकर्ष भला।
सुयोग साधक प्रकाम्य दायक, इच्छित दानी मिष्ट तरल,
सुरभित सित वर्णी क्षें बीजी, सर्व कार्य को करे सरल ॥

दोहा

क्षें बीजाक्षर मान को, रखे सुरक्षित भ्रात!
ब्राह्मी सुन्दरी तात का, ऊँचा रखती माथ ॥4॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन - त्रय - शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥25॥

बुध सुर अर्चित बुद्धि बोध से, बुद्ध आप ही कहलाये।
तीन भुवन को सुख करने से, शंकर नाम तुम्हीं पाये ॥
मोक्षमार्ग की विधि करने से, धीर! आप ही धाता हो।
भगवन्! तुम प्रस्पष्ट रूप से, पुरुषोत्तम जगत्राता हो ॥25॥

ओं ह्रीं षड्दर्शनपारंगताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

तुभ्यं-नमस् - त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं-नमः क्षिति - तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं - नमस् - त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं-नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय ॥26॥

त्रिभुवन के दुख हरने वाले, हे जिनेन्द्र प्रभु! तुम्हें नमन।
क्षितितल के आभूषण भगवन्, तीर्थंकर जिन! तुम्हें नमन ॥
तीन लोक के परमेश्वर हो, तभी करें हम तुम्हें नमन।
भवसागर के शोषणकर्त्ता, भविक जनों के तुम्हें नमन ॥26॥

ओं ह्रीं नानादुःखविलीनाय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरव - काशतया मुनीश !
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपीक्षितोऽसि ॥27॥

विस्मय क्या प्रभु! तुम्हें गुणों ने, पूर्ण ठिकाना बना लिया।
नहीं जगह किञ्चित् दोषों को, जिनवर गुण के एक ठिया ॥

मिले बहुत आश्रय दोषों को, दोषगर्व से तने हुए।
नहीं स्वप्न में देखा उनने, आप गुणों में सने हुए ॥27॥

ओं ह्रीं सकलदोषनिर्मुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख -
माभाति रूप - ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् - किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति ॥28॥

ऊँचे तरु अशोक के आश्रित, उन्नत दिव्य किरण वाला।
तमहर मनहर रूप तुम्हारा, द्योतित सुन्दर छवि वाला ॥
रश्मि सहस्त्रों वितरण करता, तिमिर मिटाता सूर्य यहाँ।
मेघ निकट में जैसे शोभे, त्यों तरु तल में ईश महाँ ॥28॥

ओं ह्रीं अशोकतरुविराजमानाय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकाव - दातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता-वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र - रश्मेः ॥29॥

मणि किरणों के अग्रभाग से, चित्रित अनुपम सिंहासन।
जिस पर शोभे कनक कान्तिमय, हे जिन! तेरा सुन्दर तन ॥
किरण समूहों से जो मण्डित, नभ में कान्तिमान तमहर।
उदय अद्रि के तुंग शिखर पर, शोभ रहा ज्यों शुचि दिनकर ॥29॥

ओं ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

कुन्दावदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारि - धार-

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥30॥

ढुरते चंचल चँवर आप पर, कुन्द पुष्प सम शोभावान।
तब जिन! तेरा कनक कान्तिमय,तन दिखता सित रजत समान ॥
चन्द्र किरण सम सित निर्झर की, सुमेरु तट पर जल धारा।
जैसी गिरती हो त्यों लगता, जिनवर दिव्य रूप प्यारा ॥30॥

ओं ह्रीं चतुःषष्टिचामरप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

छत्र - त्रयं तव विभाति शशाङ्क - कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानु - कर - प्रतापम्।
मुक्ता - फल - प्रकर - जाल - विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् - त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥31॥

मुक्ताफल की सित लड़ियों से, वृद्धिंगत शोभा जिसकी।
भानुताप रोके जिनवर का, चन्द्रप्रभा सम द्युति जिसकी ॥
वह छत्रत्रय प्रभु पर शोभे, कहे आप त्रिभुवन स्वामी।
तीन जगत के सारे प्राणी, जिनवर को माने नामी ॥31॥

ओं ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य - लोक - शुभ - सङ्गम - भूति-दक्षः।
सद्धर्म - राज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि - र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥32॥

उच्च गहन स्वर करने वाला, जिससे पूरित सर्व दिशा।
त्रिभुवन जन को सुखद समागम, विभूति देने दक्ष लसा ॥
सत्यधर्म कर्त्ता जिनेन्द्र की, जय घोषण करने वाला।
दुन्दुभि बजता नभ में हे जिन!, तव यश फैलाने वाला ॥32॥

ओं ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि-रुद्घा।
गन्धोद - बिन्दु - शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥33॥

पारिजात मन्दार नमेरु, सुन्दर तरु के दिव्य सुमन।
सन्तानक आदिक के सुरसुम, गन्धोदक सह मन्द पवन ॥
ऐसे श्रेष्ठ कुसुम समूह की, नभ से पुष्पाञ्जली गिरती।
मानो हे जिन! तेरे मुख से, दिव्य वचन माला खिरती ॥33॥

ओं ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

शुम्भत् - प्रभावलय - भूरिविभा - विभोस्ते,
लोक - त्रये द्युतिमतां द्युति - माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्- दिवाकर - निरन्तर - भूरि -संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि-सोम-सौम्याम् ॥34॥

त्रिभुवनवर्ती दीप्तिमान यदि, पदार्थ सारे आ जावें।
तो जिनेन्द्र आभा के आगे, सब ही फीके पड़ जावें ॥
प्रभु का ज्योतिर्मय भामण्डल, कोटि सूर्य का तेज हरे।
ताप न करता शीतल शशि सम, रात्रि चाँदनी वही हरे ॥34॥

ओं ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्ययुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

स्वर्गापवर्ग - गममार्ग - विमार्ग - णेष्टः,
सद्धर्म- तत्त्व - कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य- ध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः ॥35॥

स्वर्ग मोक्ष पहुँचाने वाले, सुमार्ग की यह खोज करे।
धर्म तत्त्व दर्शन की पटुता, जगहितकारी यही धरे ॥
विशद अर्थ भाषा स्वभाव में, परिणमने वाली वाणी।

जन्म जरा मरणों की हारक, दिव्यध्वनि जिन कल्याणी ॥35॥

ओं ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्याय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

उन्निद्र - हेम - नव - पङ्कज - पुञ्ज-कान्ती,
पर्युल्-लसन्-नख-मयूख-शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥36॥

खिले स्वर्ण के नव कुसुमों की, आभा से शोभित न्यारे।
नख मयूख के अग्र भाग से, अति सुन्दर जिन पद प्यारे ॥
देव वहाँ रचते कमलों को, जिनवर जहाँ चरण रखते।
बत्तिस खन की सप्त पंक्ति में, दो सौ पच्चिस सुम रचते ॥36॥

ओं ह्रीं पादन्यासेपद्मश्रीयुक्ताय क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थित श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घं।

महार्घ

चतुर्थे वलये पूज्यं, आदिनाथजिनेश्वरं।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, ओं क्षें बीजेन संयजे ॥

ओं ह्रीं निःश्रेयोभ्युदयप्राप्तये क्षें महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थचतुर्थवलयस्थित श्रीआदिनाथाय महार्घं ।

पंचम वलय

ज्ञानोदय छन्द

घ्रौं बीजाक्षर का उडु आर्द्रा, मिथुन राशि बुध ग्रह स्वामी,
उच्चाटन दुश्मन नकारता, दूर करे, रक्षक नामी।
ओं युत सद्विचार का रक्षक, क्षत्रियदा थिर शक्तिप्रदा,
सर्व शान्ति कर हरा इक्षु रस, गन्ध पुष्प शीतोष्ण सदा ॥

दोहा

घ्रौं बीजाक्षर कल्पतरु, चिन्तामणि सम जान।
भोगभूमि के काल में, जन्मे वृषभ महान ॥5॥

अथ मंडलोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इत्थं यथा तव विभूति- रभूज् - जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् - प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्-कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥37॥

धर्म देशना के विधान में, विभूति जैसी जिनवर की।
वैसी कहीं न देखी जाती, अन्य सरागी हरिहर की ॥
जैसी प्रभा रही दिनकर की, वैसी नहिं तारागण की।
समवसरण वसु प्रातिहार्य सी, विभूति लसती जिनगण की ॥37॥

ओं ह्रीं समवसरणादिविभूतिसहिताय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल,
मत्त - भ्रमद् - भ्रमर - नाद - विवृद्ध - कोपम्।
ऐरावताभ - मिभ - मुद्धत - मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव - दाश्रितानाम् ॥38॥

मद से लिप्त कपोल मूल है, चंचल पीपल पत्र समा।
जिस पर अलि दल मंडराने से, क्रोध बढ़ा तब अग्नि समा ॥
ऐसा ऐरावत सा हाथी, भक्तों के सम्मुख आवे।
तो जिनभक्त उसे लखकर भी, किसी तरह नहिं भय खावे ॥38॥

ओं ह्रीं हस्त्यादिगर्वदुर्धरभयनिवारणाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणिताक्त-,
मुक्ता - फल- प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध - क्रमः क्रम - गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगाचल - संश्रितं ते ॥39॥

हस्ति विदारण करके जिसने, भूमि रक्त से रंजित की।
भिदे गजों के सिर से गिरते, मुक्ताओं से भूषित की ॥

जिनको जिनवर के पद युग के, पर्वत की यदि ओट मिली।
उन भक्तों पर वह सिंह कैसे, कर सकता है चोट खरी ॥39॥

ओं ह्रीं केसरिभयविनाशकाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित - मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम -कीर्तन - जलं शमयत्यशेषम् ॥40॥

प्रलय काल की अग्नि तुल्य यह, दावानल सम्मुख आता।
जिसमें तेज फुलिंगे उठते, ज्वलित विश्व खाने आता ॥
ऐसा प्रचण्ड दावानल भी, प्रभु के नाम जाप जल से।
शीघ्र शमित हो जाता भगवन्!, तेरी श्रद्धा के बल से ॥40॥

ओं ह्रीं संसाराग्नितापनिवारणाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥41॥

मद युत कोकिल कण्ठ नील सम, कृष्ण नाग विष धाता हो।
क्रोध बढ़ा हो रक्त नेत्र हो, फणा उठाये आता हो ॥
जिसके उर में आप्त नाम की, अहिदमनी यदि वास करे।
तो वह भय बिन द्वय पैरों से, उसे लांघ कर गमन करे ॥41॥

ओं ह्रीं त्वन्नामनागदमनीशक्तिसम्पन्नाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्

त्वत्कीर्तनात्-तम - इवाशु भिदा - मुपैति ॥42॥
अश्व उछलते हस्ति गरजते, शत्रु भयंकर शब्द करे।
विरुद्ध राजाओं की सेना, युद्धस्थल में युद्ध करे ॥
उदित सूर्य की किरण शिखा से, विद्ध तिमिर ज्यों भग जाता।
त्यों जिनकीर्तन से वह अरिदल, छिन्न भिन्न झट हो जाता ॥42॥

ओं ह्रीं संग्राममध्येक्षेमंकराय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

कुन्ताग्र - भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह-,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।
युद्धे जयं विजित - दुर्जय - जेय - पक्षास्-
त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥43॥

कुन्ताग्रों से भिदे गजों के, बहते रक्त प्रवाहों से।
शीघ्र उतरने शीघ्र तैरने, व्यग्र युद्ध योद्धाओं से ॥
दुर्जय जेय पक्ष को जीतें, निर्भय होकर वे भविजन।
जो जिनवर के पद पंकज के, वन का लेते आश्रय धन ॥43॥

ओं ह्रीं वनगजादिभयनिवारणाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण - नक्र - चक्र-
पाठीन - पीठ-भय-दोल्वण - वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग - शिखर - स्थित - यान - पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्-व्रजन्ति ॥44॥

क्षुब्ध भयंकर मगर मच्छ की, पीठों की टक्कर जिसमें।
भयकारी विकराल दिख रहा, जलता बड़वानल जिसमें ॥
चंचल लहरों युक्त उदधि पर, जिनके जहाज संस्थित हों।
तो वे नर जिन नाम सुमरते, तट पा जाते निर्भय हों ॥44॥

ओं ह्रीं संसाराब्धितारणाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा - मुपगताश्-च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद- पङ्कज - रजो - मृत - दिग्ध - देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर-ध्वज-तुल्यरूपाः ॥45॥

रोग भयंकर हुआ जलोदर, अंग झुके ले पीड़ा भार।
शोचनीय दयनीय दशा से, जीवन आशा तजी विचार ॥
ऐसा नर तब हे जिन! तेरे, पद पंकज रज अमृत को।
धार देह पर स्वास्थ्य लाभ कर, पाता सुन्दरतम तन को ॥45॥

ओं ह्रीं दाहतापजलोदराष्टदशकुष्टसन्निपातादिसकलरोगहराय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

आपाद - कण्ठ - मुरु - शृङ्खल - वेष्टिताङ्गा,
गाढं-बृहन्-निगड-कोटि निघृष्ट - जङ्घाः।
त्वन् - नाम - मन्त्र - मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥46॥

अंग पैर से कण्ठ जहाँ तक, बड़ी साँकलों से जकड़े।
लोह बेड़ियों के बन्धन से, जांघ घिसी कर डले कड़े ॥
ऐसे मनुष्य हे जिन! तेरे, नाम मन्त्र को ध्याते हैं।
वे झट बन्धन मुक्त स्वयं हों, निर्भयता को पाते हैं ॥46॥

ओं ह्रीं नानाविधबंधनदूरकरणाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

मत्त-द्विपेन्द्र - मृग - राज - दवानलाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्ध -नोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुप - याति भयं-भियेव,
यस्तावकं स्तव - मिमं मतिमा - नधीते ॥47॥

मत्त हस्ति मृगराज दवानल, सर्प युद्ध वारिधि भय से।
रोग जलोदर बन्धन से जो, उदित हुए हैं भय दुख से ॥
हे जिन! तेरे इस संस्तव का, जो मतिमान पाठ करता।

उसके भय भयभीत हुए से, शीघ्र नशें जिन पद भजता ॥47॥

ओं ह्रीं बहुविधविघ्नविनाशनाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

स्तोत्र - स्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर - वर्ण - विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ - गता - मजस्रम्,
तं मानतुङ्ग-मवशा-समुपैति लक्ष्मीः ॥48॥

हे जिन! तेरी स्तोत्र मालिका, महागुणों से रची गयी।
बड़ी भक्ति से विविध वर्ण के, सुमनों से जो गुँथी गयी ॥
उस संस्तुति की गुणमाला को, नित्य कण्ठ में जो धारे।
उन मुनि मानतुंग को लक्ष्मी, सहज सर्वविध स्वीकारे ॥48॥

ओं ह्रीं सकलकार्यसाधनसमर्थाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहितायभक्तामरस्थित श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घं।

महार्घ

पंचमे वलये पूज्यं, आदिनाथजिनेश्वरं।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, ओं घ्रौं बीजेन संयजे ॥

ओं ह्रीं निधत्तनिकाचित-अशुभकर्मदहनाय घ्रौं महाबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्थ पंचमवलयस्थितश्रीआदिनाथाय महार्घं ।

पूर्णार्घं

संपूर्णे वलये पूज्यं, आदिनाथजिनेश्वरं ।
भक्तामरस्थजैनेन्द्रं, पंचबीजाक्षरै र्यजे ॥

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्ष्रें घ्रौं पंचबीजाक्षरसहिताय भक्तामरस्तोत्रस्थितपंचवलयस्थिताय सर्वविघ्नविनाशकायश्रीआदिनाथाय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

9 बार जाप

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्ष्रें घ्रौं ऋद्धिसिद्धिदायक श्रीआदिनाथाय नमः।

अथ चतुःषष्टि ऋद्धि मंत्राः

ओं ह्रीं अर्हं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मनःपर्ययबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं चतुर्विध-अवधिबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं संख्यातासंख्यातवर्षस्मृतिधरकोष्ठबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मतिश्रुतज्ञानयुक्तबीजबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं त्रिविधपदानुसारिणीबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं सम्भिन्नश्रोतृबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रियबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रियबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रियबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं नेत्रेन्द्रियबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं कर्णेन्द्रियबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं स्वयंप्रत्येकबोधितत्रिबुद्धबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अभिन्नदशपूर्वविद्याधरश्रमणबुद्धिऋद्धियुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वधरबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं शुभाशुभ-अष्टांगनिमित्तबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं चतुर्विधप्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं वादित्वबुद्धिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अणिमाविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं महिमाविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं लघिमाविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं गरिमाविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं प्राप्तिविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं ईशित्वविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं वशित्वविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अन्तर्धानविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं कामरूपित्वविक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं आकाशगामिनीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं जलचारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं जंघाचारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं फलचारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं पुष्पफलपत्रतरुबीजचारणक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं श्रेणीचारणतन्तुचारणक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अग्निशिखाचारिणीधूमचारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मेघधाराचारिणीज्योतिश्चारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं आकाशचारिणीक्रियाऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं उग्र-उग्रतप-अवस्थित-उग्रतपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं दीप्ततपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं तप्ततपऋद्धिसंयुक्त आदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं महातपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं घोरतपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं घोरपराक्रमतपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अघोरब्रह्मचारित्वतपऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मनोबलऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं वचनबलऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं कायबलऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं आमर्षौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं आमर्षक्ष्वेलौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं जल्लौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मलौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं विडौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं सर्वौषधिऋद्धिसंयुक्त आदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं वचननिर्विषौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं दृष्टिनिर्विषौषधिऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं आशीर्विषरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं दृष्टिविषरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं घृतस्राविरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं मधुस्राविरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अमृतस्राविरसऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसक्षेत्रऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

ओं ह्रीं अर्हं अक्षीणसंवासक्षेत्रऋद्धिसंयुक्तआदिनाथाय नमः।

इति ऋद्धिमंत्राः।

यशोगान

उपजातिछन्दः

तर्ज - संपूजकानां प्रतिपालकानां .....।

साकेतनगरे श्रीनाभिराजा, मरुदेवि-राज्ञी गुणरत्नभूमिः।
तयोश्च पुत्रः प्रथमो जिनेशस्,तमादिनाथं प्रणमामि भक्त्या ॥1॥
युगादिकाले प्रथमो मुनीन्द्रः, प्रथमो जिनेशः प्रागेव मुक्तः।
मुमुक्षु-रिक्ष्वाकु-कुलादिचन्द्रस्-तमादिनाथं प्रणमामि भक्त्या॥2॥
यस्यास्ति पुत्रो भरतश्च चक्री, श्रीकामदेवः सुदोर्बली स्यात्।
पुत्री च ब्राह्मी खलु सुन्दरी च, कौमार्यव्रतिका आर्या च जाता॥3॥
यस्योपदेशात् कृषकास्तु कृषिना, क्षत्रास्तु असिना निर्वाहयन्ति।
शिल्पेन शिल्पी लिपिकास्तु लिपिना, तमादिनाथं मनसा नमामि ॥4॥
तथोपदेशात् सुखिनस्तु वैश्याः, गोपालनैः कृषिवाणिज्यकार्यैः।
विद्याविधानैर्निपुणाः कलासु, तमादिनाथं वचसा स्तवीमि ॥5॥
यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, तथावशेषः खननात् सुप्राप्तः।
देशे विदेशे जिनबिम्बपूज्यस्, तमादिनाथं वपुषा नमामि ॥6॥
महातिशायी यस्तीर्थनाथः, प्राचीनबिम्बं सुमनोज्ञ-मूर्तिः।
भक्तामरस्थो मुनिभिः सुवन्द्यस् - तमादिनाथं सततं नमामि ॥7॥

अत्यन्त-रम्यं च विरागयुक्तं, विभूतियुक्तं प्रविलोकनीयम्।
श्रद्धास्पदस्थं पुरुदेवदेवं, तीर्थंकरेशं सततं नमामि ॥8॥
विद्याब्धिशिष्यो मुनिपुंगवः सः, निर्यापकः साधुषु श्रीसुधाब्धिः।
यस्य प्रभावाद् सर्वत्र पूजा, महाभिषेकः सत्शांतिधारा ॥9॥
यद्गन्धनीरैःपरिलिप्तमर्त्याः, कुष्ठादिरोगाद् रहिता भवन्ति।
यस्य प्रभावाद् शमयन्ति पीडास्, तमादिनाथं प्रणमामिभक्त्या ॥10॥
असीमकालो भक्तामरश्च, विशेषपूजा सुयोग्यक्षेत्रे।
भक्तामरस्थं वृषभादिनाथं, विधानमध्ये वचसा स्तवीमि ॥11॥
भव्याः सुदृष्ट्वा जिनदेवकस्य, विरागबिम्बं नयनैश्च साक्षात्।
तस्य प्रभावो नहि कथ्यशक्यो, विशुद्धभावेन नमस्करोमि ॥12॥
महाप्रभावैः शुचिबीजवर्णैः, ह्रीं क्लीं च क्ष्रूं क्षें सह घ्रौं समेतं।
भक्तामरस्थं पुरुदेवदेवं, यजामि भक्त्या मृदुभावसाकं ॥13॥

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्षें घ्रौं महाबीजाक्षरसंपन्नविघ्नहरश्रीआदिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं।

आर्याछंदः

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्षें घ्रौं, एतैर्महाबीजाक्षरैर्युक्तः।
तं श्रीआदिजिनेशं, यजितं भक्तामरस्तोत्रे ॥1॥
विद्याब्धिसूरिवन्द्यो, मंत्रप्रदातृसुधाब्धिभिर्वन्द्यः।
आदीश्वरतीर्थेशो, देहि समाधिं च मे बोधिं ॥2॥

9 बार जाप

ओं ह्रीं क्लीं क्ष्रूं क्षें घ्रौं ऋद्धिसिद्धिदायकसर्वविघ्नविनाशकश्रीआदिनाथाय नमः।

अनेन मंत्रेण लवंगैरष्टोत्तरशतं 108 जाप्यं विधेयम् ।

दोहा

पच्चिस सौ सैंताल का, वर्ष वीर निर्वाण।
अघहन सित एकम शुरु, भक्तामर सु विधान ॥
भक्तामरी विधान हो, नित्य भक्ति के साथ।
आदिनाथ के चरण में, धरते सब मृदु माथ ॥

॥ इति शुभम् भूयात् ॥

●●●

हवन विधि

भूमिशुद्धि-मन्त्र

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु कुरु ह्रूं फट् स्वाहा। (जल के छींटे लगावें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (पुष्प क्षेपण करें)

पात्रशुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।

समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

सर्वशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्राय शुद्धाय पवित्रजलेन स्थलशुद्धिं होमकुण्डशुद्धिं, पात्रशुद्धिं, समिधाशुद्धिं साकल्यशुद्धि च करोमि।

यन्त्र स्थापन मन्त्र

अर्हं मन्त्रं नमस्कृत्य रत्नत्रयतपोनिधिं।

सिद्धयन्त्रं स्थापयामि सर्वोपद्रवशान्तये।।

श्रीपीठे यन्त्रस्थापनं करोमि (यन्त्र स्थापित करें।)

(निम्न मन्त्रों से विनायक यन्त्र पूजा करके अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमो नृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तदर्शनेभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तवीर्येभ्यः स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तसुखेभ्यः स्वाहा

कुण्डशुद्धि मन्त्र

भो वायुकुमार! सर्वविघ्नविनाशनाय महीपूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।

भो मेघकुमार! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्ष्वीं क्षः फट् स्वाहा।

भो अग्निकुमार ! धरां ज्वलय ज्वलय अं हं सं तं पं स्वं झं यं क्ष्वीं क्षः भूः फट् स्वाहा।

कुण्डों पर मौलि बन्धन

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चवर्णसूत्रेण त्रीन् वारान् वेष्टयामि।

आसन मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्लूं ह्लूं णिस्सहि आसने उपविशामि स्वाहा।

मौलिबन्धन मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्लूं फट् स्वाहा।

मौनव्रतग्रहण मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं मौनस्थितार्थं मौनव्रतं गृह्णामि स्वाहा।

जलशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीकपुण्रीकगङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदा-नारीनरकान्तास्वर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिजलसुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्न-गन्धाक्षत पुष्पार्चितामोदकं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

मंगलकलश स्थापन मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्तिविधानाय पुण्याहवाचनार्थं मंगलकलशं स्थापयामि।

(ईशान कोण में मंगल कलश स्थापित करें)

दीपक स्थापन मन्त्र

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं ,सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा ,किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(निम्न मन्त्रों से विनायक यन्त्र पूजा करके अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (जलं)
ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (सुगन्धं)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतं)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पं)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (नैवेद्यं)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपं)
ॐ ह्रीं अभीष्टफलप्रदाय नमः (फलं)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (अर्घ्यं)

द्रव्याणि सर्वाणि विधाय पात्रे ह्यनर्घ्यमर्घ्यं वितरामि भक्त्या।
भवे भवे भक्तिरुदारभावाद् येषां सुखायास्तु निरन्तराय।।

ॐ ह्रीं विनायकसिद्धयन्त्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्ये कर्णिकमर्हदार्यमनघं बाह्येऽष्टपत्रोदरे।
सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरून् साधूंश्च दिक्पत्रगान्।।
सद्धर्मागमचैत्यचैत्यनिलयान् कोणस्थदिक्पत्रगान्।
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्टया यजे।।

ॐ ह्रीं अर्हदादिनवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवस्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्व.।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निं स्थापयामि।

(दीपक से कपूर जलाकर अग्नि प्रज्वलित कर हवा करें)

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूतकाले, ह्यागत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः।
वह्निव्रजैर्जिनपदेहमुदारभक्त्या, देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि।।

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नौ कृतसंस्काराय तीर्थंकर-परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (चौकोर कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽग्नीन्द्रोत्तमाङ्गस्फुरदुग्ररोचिः।
संस्थाप्य पूज्यश्च समाह्वनीयो, विघ्नौघ-शान्त्यै विधिना हुताशः।।

ॐ ह्रीं वृत्ते द्वितीयगणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नौ कृतसंस्कराय गणधरदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (गोल कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

श्री दक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात् प्रणिताग्निदेवैः
निर्वाणकल्याणक-पूतकाले, तमर्चये विघ्न-विनाशनाय।

ॐ ह्रीं त्रिकोणे तृतीयसामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नौ कृतसंस्काराय सामान्यकेवलिनेऽर्घ्यम् निर्व. स्वाहा। (त्रिकोण कुण्ड के पास अर्घ्य चढ़ावें)

आहुतिमन्त्राः

१. ॐ ह्रां अर्हद्भ्यः स्वाहा, **२. ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा,**
३. ॐ ह्रूं सूरिभ्यः स्वाहा, **४. ॐ ह्रौं पाठकेभ्यः स्वाहा,**
५. ॐ ह्रः साधुभ्यः स्वाहा, **६. ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा,**

७. ॐ ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा, ८. ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्य: स्वाहा,
९. ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्य स्वाहा, १०. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नम: स्वाहा,
११. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नम: स्वाहा १२. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नम: स्वाहा।

पीठिकामन्त्रा:

षट्त्रिंशत्पीठकामन्त्रै:,काम्यमन्त्रावसानकै:।
इज्यावशिष्टहव्याद्यै:, कुर्वे तावतिथाहुति:।। १।।

१. सत्यजाताय नम: २. अर्हज्जाताय नम:
३. परमजाताय नम: ४. अनुपमजाताय नम:
५. स्वप्रधानाय नम: ६. अचलाय नम:
७. अक्षयाय नम: ८. अव्याबाधाय नम:
९. अनन्तज्ञानाय नम: १०. अनन्तदर्शनाय नम:
११. अनन्तवीर्याय नम: १२. अनन्तसुखाय नम:
१३. नीरजसे नम: १४. निर्मलाय नम:
१५. अच्छेद्याय नम: १६. अभेद्याय नम:
१७. अजराय नम: १८. अमराय नम:
१९. अप्रमेयाय नम: २०. अगर्भवासाय नम:
२१. अक्षोभ्याय नम: २२. अविलीनाय नम:
२३. परमघनाय नम: २४. परमकाष्ठयोगरूपाय नम:
२५. लोकाग्रवासिने नमो नम: २६. परमसिद्धेभ्यो नमो नम:
२७. अनादिपरमसिद्धेभ्यो नमो नम: २८. अर्हत्सिद्धेभ्यो नमो नमङ
२९. केवलिसिद्धेभ्यो नमो नम: ३०. अन्त: कृत्सिद्धेभ्यो नमो नम:
३१. परम्परासिद्धेभ्यो नमो नम: ३२. अनादिपरम्परसिद्धेभ्यो नम:
३३. परमार्थसिद्धेभ्यो नमो नम: ३४. अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नम:
३५. त्रिकालसिद्धेभ्यो नमो नम:
३६. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्य आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्हं निर्वाणपूजार्हं अग्नीन्द्र अग्नीन्द्र स्वाहा।

काम्यमन्त्र:

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

जातिमन्त्राः

अष्टभिर्जातिमन्त्रैश्च तावदव्यग्रमानसः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। २।।

१. सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि **२. अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि**
३. अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्यामि **४. अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि**
५. अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि **६. अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि**
७. रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि
८. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

निस्तारकमन्त्राः

निस्तारकादिभिर्मंत्रै-रेकादशमितैरयम्।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। ३।।

१. सत्यजाताय स्वाहा, **२. अर्हज्जाताय स्वाहा,**
३. षट्कर्मणे स्वाहा, **४. ग्रामयतये स्वाहा,**
५. अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा, **६. स्नातकाय स्वाहा,**
७. श्रावकाय स्वाहा, **८. देवब्राह्मणाय स्वाहा।**
९. सुब्राह्मणाय स्वाहा, **१०. अनुपमाय स्वाहा।**
११. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।
(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

ऋषिमन्त्राः

ऋषिमन्त्रैर्महर्ष्युक्तैः पंचदशमितैरथ।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। ४।।

१. सत्यजाताय नमः **२. अर्हज्जाताय नमः**
३. निर्ग्रन्थाय नमः **४. वीतरागाय नमः**
५. महाव्रताय नमः **६. त्रिगुप्ताय नमः**

७. महायोगाय नमः ८. विविधयोगाय नमः
९. विविधर्द्धये नमः १०. अङ्गधराय नमः
११. पूर्वधराय नमः १२. गणधराय नमः
१३. परमर्षिभ्यो नमो नमः १४. अनुपमजाताय नमो नमः
१५. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

सुरेन्द्रमन्त्राः

अथ त्रयोदशभिर्मन्त्रैः,सुरेन्द्रादिभिराज्जसैः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। ५।।

१. सत्यजाताय स्वाहा, २. अर्हज्जाताय स्वाहा,
३. दिव्यजाताय स्वाहा, ४. दिव्यार्च्यजाताय स्वाहा,
५. नेमिनाथाय स्वाहा, ६. सौधर्माय स्वाहा,
७. कल्पाद्यिपतये स्वाहा, ८. अनुचराय स्वाहा,
९. परम्परेन्द्राय स्वाहा, १०. अहमिन्द्राय स्वाहा,
११. परमार्हताय स्वाहा, १२. अनुपमाय स्वाहा,
१३. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

परमराजादिमन्त्राः

मन्त्रैर्परमराज्याद्यैरथ नवसुसंख्यकैः।
इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। ६।।

१. सत्यजाताय स्वाहा, २. अर्हज्जाताय स्वाहा,
३. अनुपमेन्द्राय स्वाहा, ४. विजयार्च्यजाताय स्वाहा,
५. नेमिनाथाय स्वाहा, ६. परमजाताय स्वाहा,

७. परमार्हताय स्वाहा, ८. अनुपमाय स्वाहा,

९. सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशाज्जय दिशाज्जय नेमिविजय नेमि विजय स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

परमेष्ठिमन्त्राः

परमेष्ठ्यादिभिर्मन्त्रैः त्रयोविंशतिमितैरथ।

इज्यावशिष्टहव्याद्यैः कुर्वे तावतिथाहुतिः।। ७।।

१. ॐ सत्यजाताय नमः २. ॐ अर्हज्जाताय नमः

३. ॐ परमजाताय नमः ४. ॐ परमार्हताय नमः

५. ॐ परमरूपाय नमः ६. ॐ परमतेजसे नमः

७. ॐ परमगुणाय नमः ८. ॐ परमस्थानाय नमः

९. ॐ परमयोगिने नमः १०. ॐ परमभाग्याय नमः

११. ॐ परमर्द्धये नमः १२. ॐ परमप्रसादाय नमः

१३. ॐ परमकांक्षिताय नमः १४. ॐ परमविजयाय नमः

१५. ॐ परमविज्ञानाय नमः १६. ॐ परमदर्शनाय नमः

१७. ॐ परमवीर्याय नमः १८. ॐ परमसुखाय नमः

१९. ॐ सर्वज्ञाय नमः २०. ॐ अर्हते नमः

२१. ॐ परमेष्ठिने नमो नमः २२. ॐ परमनेत्रे नमो नमः

२३. ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रिलोकविजय त्रिलोकविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

काम्यमन्त्रः

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु समाधिमरणं भवतु।

(हवन पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें, तत्पश्चात् जप मन्त्र की दशांश आहुतियां करें)

Since 1973

Computer Re-Setting by :

Jeetendra Patni

M. 98290 71922

10.05.2021